साहित्यिक यात्रा और कवि भारतेंदु

* डॉ. सुशीला सारस्वत

सारांश

भारतेन्दु ने हिंदी साहित्य को एक अभूतपुर्व योगदान दिया है। उन्होंने काव्य तथा गद्य दोनो विधवाओं में अप्रतिम कार्य किया है। उनके द्वारा मौलिक तथा अनूदित दोनो प्रकार के ग्रंथ लिखे रचे गए है। उनकी रचनाएँ देशभक्ति की भवना से ओत–पोत थी। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन अंग्रेजी शासन पर कड़ा प्रहार किया है। तथा समाज को जागरुक तथा सजग बनाया है। अतः उनकी विशिष्ट सेवाओं के कारण उन्हें हिंदी साहित्य का प्रवर्तक कहा जा सकता है।

कूट शब्द– पितामह, राष्ट्रीयता, प्रतिभा

प्रस्तावना

कवि का प्रमुख कर्म साहित्य का सृजन है। साहित्य सृजन से ही उसके मन में संतोष रहता है साहित्य सृजन में साहित्यिक सभी गतिविधियों का तना–बना होता है। कवि युग के अनुरूप अपना साहित्यिक ताना–बाना समाज को देते हैं और उसी के अनुरूप वे लेखनी चलते हैं। ऐसा ही भारतेंदु कवि ने भी किया है वे साहित्य के पुरोधा है। उनके द्वारा रचित साहित्य जन–जन को लाभ देता है।

भारतेन्दु हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे आधुनिक हिंदी के पहले साहित्यकार थे। इनकी विद्ता के कारण इन्हें भारतेन्दु की उपाधि से विभूषित किया गया। इनकी कृतियों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इनमें कवि, लेखक, नाटककार, बनने की अद्भुत क्षमता थी। यद्यपि भारतेन्दु जी विविध भषाओं में रचना करते थे, किन्तु ब्रजभाषा पर इनका असाधारण अधिकार था। इस भाषा में इन्होंने अद्भुत श्रंगारिकता का परिचय दिया है। इनका साहित्य प्रेममय था, क्योंकि प्रेम को लेकर ही इन्होंने अपने ''सप्त संग्रह" प्रकाशित किए है। प्रेम माधुरी इनकी सर्वेत्कृष्ठ रचना है। बादशाह दर्पण इनका इतिहास की जानकारी प्रदान करने बाला ग्रंथ है। इन्होंने संयोग का बड़ी ही सजीव एंवं सुन्दर चित्रण किया है। इन्होंने भरत की विभिन्न्ता पर खिन्नता व्यक्त की है–

भारत में सब भिन्न अति, ताही सो उत्पात।

विविध बेस मतहूं विविध, भाषा विविध लखात।

इनका हिंदी के उत्थान के लिए कहना है कि –

अंग्रेजी पढ कै जदपि, सब गुन होत प्रवीण।

पै निज भषा ज्ञान बिन, रहत हीन कै हीन।

हिंदी की प्रतिष्ठा करते हुए वे कहते हैं कि –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।

जिस समय भारतेंदु का अविर्भाव हुअरा देश गुलामी की जंजीरो में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजी शासन में अंगेजी चरमोत्कर्ष पर थी। शासन तन्त्र से संबंधित संपूर्ण कार्य अंग्रेजी में होता था। अंग्रेजी हकुमत में पद लालुपता की भवना प्रबल थी। भरतीय लोगों में विदेशी सभ्यता के प्रति आकर्षक था। ब्रिटिश आधिपत्य में लोग अंग्रेजी पढ़ना और समझना गौाव की बात समझते थे। हिंदी के प्रति लोगों में आकर्षक कम था, क्योंकि अंग्रेजी निति से हमारे साहित्य पर बुरा असर पड़ रहा था।

हमारी संस्कृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहरा था। ऐसे में भारतेंदु ने अनेक काव्य कृतियाँ लिखी–भक्त सर्वस्व प्रेममालिका, प्रेम तरंग आदि। उनके द्वारा लिखे गए नाटक है– वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, भरत दुर्दशा, सत्य हरिश्चंद्र, नील देवी, अंधेर नगरी, मुद्रा राक्षस आदि। भरतेंदु जी ने भक्ति प्रधान एवं श्रंगार युक्त रचनाएं की हैं। उनमें से अपने देश की प्रति बहुत बड़ी निष्ठा थी, उन्होनें सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन की बात की है। उनकी भक्ति प्रधान रचनाएं धनानंद एवं रसखान की रचनाओं की कोटि की है। उन्होंने संयोग की अपेक्षा वियोग पर विषेश बल दिया है। वे स्वतंत्र प्रेमी एवं प्रगतिशील विचारक व लेखक थे। उन्होंने माँ सरस्वती की साधना में अपना धन पानी की तरह बहाया और साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया। जीनव का अंतिम दौर आर्थिक तंगी से गुजारा क्योंकि धन का उन्होंने बड़ा भाग साहित्य समाज के लिए लगाया। ये भषा की शुद्धता के पक्ष में थे। इनकी भाषा बड़ी परिष्कृत एवं प्रवाह से भरी है।

भारतेंदु जी की रचनाओं में इनकी रचनात्मक प्रतिभा को भलि प्रकार से देखा जा सकता है। भारतेंदु ने गद्य विद्या के विकाश में अनुपम योगदान दिया। नाटक निबंध तथा आलोचना का तो प्रारंभ भी वास्तविक रुप में भरतेंदु के ही लेखनी से हुआ। भरतेंदु के प्रभव से उनके अल्प जीवनकाल में लेखको का एक मंडल तैयार हो गया था। जिसे भारतेंदु मंडल के नाम से जाना गया।

इसमें पंडित प्रताप नारायण मिश्र, बद्री नारायण चौधरी, ठाकुर जगमोहन सिंह एवं पंडित बाल कृष्ण भट्ट जैसे विद्वान सम्मिलित थे। इन सभी ने भारतेंदु हरिश्चंद के नेतृत्व में हिंदी गद्य की सभी विद्याओं में अपना योगदान दिया। भारतेंदु ने इतिहास, धर्म, कला, समाजसुधार, जीवनी, यात्रा, वृतांत, भाषा इत्यादि विषयों पर कई निबंध लिखे। इनके निबंध हरिशचंद्र मैगजीन में प्रकाशित होते थे।

प्रताप नारायण मिश्र तथा बाल कृष्ण भट्ट ने भी कई निबंधों की रचना की। भारतेंदु हरिशचंद्र ने कालिदास, जयदेव, सूरदास, शंकराचार्य, मुगल बादशाहों आदि की जिवनियाँ भी लिखी जो ''चरितावली'' ''बादशाह दषर्ण'' ''उदयपुरोदय'' तथा ''बूँदी'' के राजवंश नामक ग्रंथो में संकलित है। भारतेंदु ने ''सरयू पार की यात्रा'' ''लखनउ की यात्रा'' औश्र ''हरिद्वार की यात्रा'' जैसी यात्रावृत्त विषयक रचनाएँ भी की जो ''कवि वचन सुधा'' के अंको में प्रकाशित हुई थी। हिंदी साहित्य की गद्यात्मक के विकाश में भरतेंदु हरिशचंद्र के योगदान को परखा नहीं जा सकता है। निंबंध और नाटक के प्रारंभ की श्री निश्चय ही भारतेंदु को जाता है, पर इससे भी आगे हिंदी गद्य की भाषा का परिष्कार एवं एक वयवस्थित रुप प्रदान करने का जो महती कार्य इन्होंने किया वह भरतेंदु को हिंदी गद्य के आधार स्तंभ के रुप में स्थापित करता है।

उनमें राष्ट्रीयता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस राष्ट्रवादह चेतना

को न केवल रुपांतरित किया बल्कि आमजन को प्ररित भी किया। इसके लिए वे कहीं व्यंजना का सहारा लेते है, तो कहीं लक्षण का। भारतेंदु का समय वह काल था जबकि अंग्रेजो की दमनकारी नितियाँ पूरे देश में पाँव पसार चुकी थी। इसके बाबजूद भारतेंदु अंग्रेजों की निंदा करने में कभी नहीं डरे। उन्होंने मुखर होकर लिखाः–

'भीतर भीतर सब रस चूसै

बाहर से तनम न धन चूसै

जहिर बातन में अति तेज

क्यों सखि साजन नहीं अंग्रेज'।

अंग्रेजो की चतुराई और वाक्पटुता का यह अद्भुत उदाहरण है। वे देश की पीड़ा को अभिव्यक्त करने में कभी नहीं हिचकिचाए। उन्होंनें निर्भिक होकर लिखा कि जिस भरत को हम पूरे विश्व में सर्वोत्तम मानते थे। आज उसी भारत से खुशियाँ गायब हो चुकी है। उदात्त राष्ट्रीय भवना से भारतेंदु की रचनाएं ओत–प्रोत है। वे देश की चिंता लगातार करते है, और अपने अतीत को याद करते हुए भरत की इस दशा से दुःखी है।

''जहां भीमकरन अर्जुन की छटा दिखती

वहाँ रही मूढ़ता कलह अविद्या राती

अब जहं देखंहु तहं दुखहि दिखाई

हा हा भरत दुर्दशा न देखा जाई।

"भारतेंदु की राष्ट्रीय भवना उनके नाटकों में बार–बार दिखई देती है। अंधेर नगरी इसका उदाहरण है। अंधेर नगरी में चौपट राजा का राज्य है।

यह अंधेर नगरी का प्रतीक है। भरत की राज्य व्यवस्था का इसी नाटक में भारतेंदु चना बेचने वाले पात्र के माध्यम से पूरी शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग करते है। राष्ट्रीयता की भावना का एक प्रमुख अंग है अपनी भाषा के प्रति जागरुकता। भारतेंदु इस बिंदु को लेकर अत्यंत संवेदनशील औश्र सजग थे। वे अपनी भषा की आस्मिता के लिए लगातार अपनी लेखनी चला रहे थे। एक ओर वे कहते है,

''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।"

ते दूसरी तरफ अंग्रेजी के विस्तार को देखते हुए उसका महत्व तो रुपायित करते है, पर अपनी भाषा से बड़ा उसे नहीं मानते। अंग्रेजी पढ़िके जद्यपि सब गुन होत प्रवीण। वै निज भाषा ज्ञान बिनु रहत हीन के हीन। अंग्रेजों के द्वारा प्रवर्तित प्रेस के महत्व को जानकर भारतेंदु ने उसका उपयोग किया और स्वयं अनेक पत्रिकाएं निकालकर भरतीय जनमानस को प्ररित करने का काम किया। भारतेंदु की एक बड़ी विशेषता थ कि वे यात्राएँ किया करते थे और भरत के अनेक प्रदेशों की राजनैतिक जागरुकता से परिचित भी थे। वे बंगाल के परिवेश के माध्यम से भारत दुर्दशा पर लिखते है कि हिंदी प्रदेश उतना जागरुक नहीं है। जितना बंगाल। भारतेंदु 'कविवचन सुधा' में लगातार अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध कठोर टिप्पणियाँ लिखते रहें। भारतेंदु की दृष्टि उन्हें राष्ट्रीयता का प्रबल समर्थक सिद्ध करती है। वे समाज के हर क्षेत्र का मूल्याँकन और विश्लेषन करते हैं। चाहे वह शिक्षा हो उद्योग हो सामाजिक साद्भाव हो या राष्ट्रीय चेतना। अपने अपेक निबंधों में भारतेंदु ने सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन विश्लेषण किया है।

अतः भारतेंदु हरिश्चंद्र के संपूर्ण साहित्य का चिंतन करने के पश्चात् हमें यह ज्ञात होता है कि बाबू हरिश्चंद्र बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न थे। उन्होंने समाज और साहित्य का प्रत्येक कोना झाँका है। अर्थात् साहित्य के सभी क्षेत्रों में उन्होंने कार्य किया है। किन्तु यह खेद का ही विषय रहा है कि 35 वर्षो की अल्पायु में ही वे स्वर्गवासी हो गए थे। यदि ऐसा न होता तो संभवतः हिंदी साहित्य का कहीं और ज्यादा विकास हुआ होता यह उनके व्यक्तित्व की ही विशेषता थी कि वे कवि, लेखक, नाटककार, साहित्यकार एवं संपादक सब कुछ थे।

हिंदी साहित्य को पुष्ट करने में आपने जो योगदान प्रदान किया है। वह सराहनीय है तथा हिंदी जगत आप की सेवा के लिए सदैव ऋणी रहेगा। इन्होंने अपने जीवन काल में लेखक के अलावा कोई कार्य नहीं किया। तभी तो 35 वर्ष की अल्पायु में ही 72 ग्रंथों की रचना करना संभव संभव हो सकता था। इन्होंने छोटे एवं बड़े सभी प्रकार के ग्रंथों का प्रणयन किया है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। और अपने कार्यो से इन्होंने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सदा के लिए स्थायी रुप से स्थान बनाया है। अपनी विशिरूट सेवाओं के कारण ही ये आधुनिक हिंदी साहित्य के बारे में ठीक ही कहा हैः–

भारतेंदु कर गये

भरती की वीणा निर्माण।

किया अमर स्पर्षो में,

जिसका बहु विधि स्वर संसाधन

अतः यह कहा जा सकता है कि बापू भारतेंदु हरिश्चंद्र जी हिंदी के साहित्य के आकाश के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। उनके द्वारा हिंदी साहित्य में दिया गया योगदान महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है।

***व्याख्याता**
हिन्दी विभाग
बी.बी.डी. राजकीय महाविद्यालय,
चिमनपुरा, (शाहपुरा)

संदर्भ ग्रंथ

1. नाटक का इतिहास – अजय सिंह
2. विलक्षण प्रतिभा के धनी –समृति जोशी
3. हिंदी साहित्य कोश भाग –2 पृ. 409
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र और निज भाषा– नंद किशोर
5. भरतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास–परंपरा – रामविलास शर्मा